9

हम ना किसी के....

(कविवर पण्डितश्री द्यानतरायजी)

हम ना किसी के कोई ना हमारा, झूठा है जग का व्यवहारा।
तन सम्बन्ध सकल परिवारा, सो तन हमने जाना न्यारा ॥1 ॥

पुण्य उदय सुख की बढ़वारा, पाप उदय दुःख होत अपारा।
पुण्य-पाप दोऊ संसारा, मैं सब देखन-जाननहारा ॥2 ॥

मैं तिहुँ जग तिहुँ काल अकेला, पर संजोग भया भव मेला।
थिति[१] पूरी कर खिर-खिर जाँहि, मेरे हर्ष शोक कछु नाहिं ॥3 ॥

राग भावतें सज्जन जानें, द्वेष भावतें दुर्जन मानें।
राग-द्वेष दोऊ मम नाहिं, द्यानत मैं चेतन पद माहिं ॥4 ॥

---

१. समय